फसल अनुसंधान को बजट में मिले प्रोत्साहन

एजेंसी/नवज्योति, नई दिल्ली

एग्री बायोटेक उद्योग ने कृषि अर्थव्यवस्था के विकास को बढ़ावा देने, किसानों की आय सुधारने और भारतीय कृषकों को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए बजट 2016 में उपाय किए जाने का आग्रह करते हुए कहा है कि फसल अनुसंधान को भी प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।

इस उद्योग के प्रमुख संगठन 'एसोसिएशन ऑफ बायोटेक लेड एन्टरप्राइज़ेज़: एग्रीकल्चर फोकस्ड ग्रुप' के कार्यकारी निदेशक डॉ शिवेन्द्र बजाज ने कहा कि वर्ष 2015-16 के आधार पर देश में एग्री बायोटेक्नोलॉजी उद्योग एक मोड़ पर खड़ा है। नई प्रोद्यौगिकियों के द्वारा भारतीय कृषि और किसानों की आजीविका में सुधार की ऐसे लोग अनदेखी कर रहे हैं, जिन्हें भारतीय शोधकर्ताओं की क्षमता पर या वैज्ञानिक प्रगति पर भरोसा नहीं है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियां, जिनकी एग्री-बायोटेक क्षेत्र में महत्वाकांक्षी योजनाएं हैं, प्रतिभा और बुनियादी संरचनाओं पर पर्याप्त निवेश कर रही हैं।

उन्होंने कहा कि सुरक्षा और फायदों के मूल्यांकन के बगैर देश में सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्रों द्वारा फसल प्रोद्यौगिकी में किया गया 12 हजार करोड़ रुपए का निवेश जोखिम में पड़ सकता है।

सुरक्षा को लेकर इसी तरह के भय के कारण वर्ष 2005 के बाद से कृषि क्षेत्र में कोई नया जैव प्रोद्यौगिकी इनोवेशन नहीं हुआ है। उन्होंने कहा कि बीटी ब्रिंजल पर वर्ष 2010 में रोक लगा दी गई, जबकि बांग्लादेश इसी प्रोद्यौगिकी के साथ आगे बढ़ गया। हालांकि, एग्री बायोटेक्नोलॉजी एकमात्र प्रोद्यौगिकी नहीं है, लेकिन जब सरकार कृषि क्षेत्र के नवीनीकरण को लेकर गम्भीर हो तो यह बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है। एग्री-बायोटेक्नोलॉजी के साथ कृषि में पारम्परिक कृषि और जैविक खेती का भी इस्तेमाल किया जा रहा है।